बंदर और मगरमच्छ

एक नदी के किनारे एक जामुन के पेड पर एक बन्दर रहता था। उस पेड पर बहुत ही मीठे-मीठे जामुन लगते थे। एक दिन एक मगरमच्छ खाना तलाशते हुए पेड के पास आया। बन्दर ने उससे पूछा तो उसने अपने आने की वजह बताई। बन्दर ने बताया की यहाँ बहुत ही मीठे जामुन लगते हैं और उसने वो जामुन मगरमछ को दिए। उसकी मित्रता नदी में रहने वाले मगरमच्छ के साथ हो गयी। वह बन्दर उस मगरमच्छ को रोज़ खाने के लिए जामुन देता रहता था।

एकदिन उस मगरमच्छ ने कुछ जामुन अपनी पत्नी को भी खिलाये। स्वादिष्ट जामुन खाने के बाद उसने यह सोचा कि रोज़ाना ऐसे मीठे फल खाने वाले का दिल भी खूब मीठा होगा, उसने अपने पति से कहा कि उसे उस बन्दर का दिल चाहिए और वो इसी ज़िद पर अड गई। उसने बीमारी का बहाना बनाया और कहा कि जब तक बन्दर का कलेजा उसे नही मिलेगा वो ठीक नही हो पायेगी।

पत्नी कि ज़िद से मजबूर हुए मगरमच्छ ने एक चाल चली और बन्दर से कहा कि उसकी भाभी उसे मिलना चाहती है। बन्दर ने कहा कि वो भला नदी में कैसे जायेगा? मगरमच्छ ने उपाय सुझाया कि वह उसकी पीठ पर बैठ जाये, ताकि सुरक्षित उसके घर पहुँच जाए।

बन्दर भी अपने मित्र की बात का भरोसा कर, पेड से नदी में कूदा और उसकी पीठ पर सवार हो गया। जब वे नदी के बीचों-बीच पहुंचे, मगरमच्छ ने सोचा कि अब बन्दर को सही बात बताने में कोई हानि नहीं और उसने भेद खोल दिया कि उसकी पत्नी उसका दिल खाना चाहती है। बन्दर का दिल टूट गया, उसको धक्का तो लगा, लेकिन उसने अपना धैर्य नहीं खोया।

बन्दर तपाक से बोला “ओह मेरे मित्र तुमने, यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बताई क्योंकि मैंने तो अपना दिल जामुन के पेड में सम्भाल कर रखा है। अब जल्दी से मुझे वापस नदी के किनारे ले चलो ताकि मैं अपना दिल लाकर अपनी भाभी को उपहार में देकर उसे खुश कर सकूं।”

मूर्ख मगरमच्छ बन्दर को जैसे ही नदी-किनारे ले कर आया बन्दर ने ज़ोर से जामुन के पेड पर छलांग लगाई और क्रोध से भरकर बोला, “मूर्ख, दिल के बिना भी क्या कोई ज़िन्दा रह सकता है? जा, आज से तेरी-मेरी दोस्ती समाप्त।”

शिक्षा :1. मुसीबत के क्षणों में धैर्य नहीं खोना चाहिए ।

2. अनजान से दोस्ती सोच समझकर करनी चाहिए।

3. मित्रता का सदैव सम्मान करें।

गंदर ाेर भगरभच्छ

ाक नमी क किनार िक एभन्न क पेड़ पर ाक गन्नु रहता था। उस पड़ पर रहड़ की भीo-भीo एभन्न लगत थ। ाक मिन ाक भगरभच्छ पानी तलाशत हुए पड़ क पास मुथा। गन्नु न उसस पक्रा त उसन मपन मुन की वरह गता। गन्नु न गेताया की यहां गहड़ की भीo एभन्न लगत ह और उसन व एभन्न भगरभक क मिए। उसकी मित्रता नमी स रहन वाल भगरभच्छ स हो गयी। वह गन्नु उस भगरभच्छ क रोज खान क लिए एभन्न मेता रहता था।

ाक मिन उस भगरभच्छ न कुछ एभन्न मपनी पत्नी क भी खिलाया। स्वामिष्ट एभन्न खान क गाम उसन यह सोचा कि रोज़ाना इस भीo फल खान वाल का मिल भी कितना भीठा होगा, उसन मपन पति स कहा कि उस उस गन्नु का मिल चाहिए और व उसी मिन पर मड़ गयी। उसन गीमारी का गहाना गनाया और कहा कि एग तक गन्नु का कलजा उस नहीं मिलगा व ठीक नहीं हो पायगी।

पत्नी कि मिन स मिलवर हार भगरभच्छ ाक चाल चली और गन्नु स कहा कि उसकी भाभी उस मिलना चाहती ह। गन्नु न कहा कि व कैसा नमी स कैस जायगा? भगरभच्छ उपाय सुझाया कि वह उसकी पीo पर गैठ जाय, ताकि सुरक्षित उसक घर पहुँच जाए।

गन्नु भी मपन मित्र की गात का भरोसा कर, पड़ स नमी स कूदा और उसकी पीo पर सवार हो गया। एग व नमी क गीच-गीच पहुँच, भगरभच्छ न सोचा कि मग गन्नु क सच्ची गात गतान स कोई हानि नहीं और उसन भेम खोल मिया कि उसकी पत्नी उसका मिल खाना चाहती ह। गन्नु का मिल टूट गया, उसक फोकड़ लेगा, लेकिन उसन मपना धैर्य नहीं खोया।

गन्नु तपाक स गेला "ओह भर मित्र, तुमन, यह गात भुझ पहल क्यों नहीं गताई क्योंकि भैंन त मपना मिल एभन्न क पड़ स सम्भाल कर रखा ह। मग एल्मी स भुझ वापस नमी क किनार ल चल ताकि स मपना मिल लाकर मपनी भाभी क उपहार म मकर उस खुश कर सकूं"

भूख भगरभच्छ गन्नु क गैसे ही नमी-किनार ल कर मुथा गन्नु न एोर स एभन्न क पड़ पर छलांग लगाई और क्रोध स गोलकर गोला, "भूख, मिल क गिना भी कहीं कोई जिन्दा रह सकता ह? जा, मुझ स तेरी-मेरी मोस्ती समाप्त।"

सीख :1. संकट क समय स धैर्य नहीं खोना चाहिए।
2. मनजान स मोस्ती सोच समझकर करनी चाहिए।

मनुवाम - विम्रु कौल एला